वाक्य-रचना

वाक्य की रचना पदों से होती है। इस रचना में मुख्यतः चार बातें ध्यान देने की होती हैं—

(१) **पदक्रम या शब्दक्रम**—विश्व में काफ़ी भाषाएँ ऐसी हैं, जिनमें 'पदक्रम' का वाक्य-रचना में महत्वपूर्ण स्थान है। चीनी आदि स्थान-प्रधान भाषाओं में तो यह बहुत ही महत्वपूर्ण है, किन्तु अंग्रेज़ी, हिन्दी आदि वियोगात्मक भाषाओं में भी इसके महत्व को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। इनमें एक सीमा तक वाक्य में शब्दों का स्थान निश्चित है। जैसे हिन्दी में प्रायः कर्ता पहले, कर्म बाद में तथा क्रिया वाक्य के अन्त में आती है—

राम ने मोहन को मार डाला।

इसके विपरीत अंग्रेज़ी में क्रिया बीच में आती है तथा कर्म बाद में—

Ram killed Mohan.

इसी प्रकार विशेषण-विशेष्य, क्रियाविशेषण-क्रिया, एक साथ आए कई विशेषण अथवा क्रियाविशेषण, पदबंधों तथा उपवाक्यों का भी हर भाषा में विशेष क्रम होता है।

वाक्य में पद-क्रम की दृष्टि से भाषाएँ दो प्रकार की हैं। एक तो वे हैं जिनमें वाक्य में शब्दों (पदों) का स्थान निश्चित नहीं है। इन भाषाओं में शब्दों में विभक्ति लगी होती है, अतएव किसी भी शब्द को उठाकर कहीं रख दें, अर्थ में परिवर्तन नहीं होता। ग्रीक, लैटिन, अरबी, फ़ारसी तथा संस्कृत

Scanned with CamScanner

आदि इसी प्रकार की हैं।[१] इनके एक ही वाक्य को शब्दों के स्थान में परिवर्तन करके कई प्रकार से कहा जा सकता है। कुछ उदाहरण हैं—

अरबी

ज़रबअ जैदुन अम्रन=ज़ैद ने अमर को मारा।
ज़रबअ अम्रन ज़ैदुन=अमर को ज़ैद ने मारा।

फ़ारसी

ज़ैद अमररा ज़द=जैद ने अमर को मारा।
अमररा ज़ैद ज़द=अमर को ज़ैद ने मारा।

संस्कृत

ज़ैदः अमरं अहनत्= ज़ैद ने अमर को मारा।
अमरं ज़ैदः अहनत्=अमर को ज़ैद ने मारा।

इन भाषाओं में भी इस प्रकार की छूट के बावजूद क्रम-विषयक कुछ नियम अवश्य होते हैं।

दूसरी प्रकार की भाषाएँ वे होती हैं, जिनमें वाक्य में शब्द (पद) का क्रम निश्चित रहता है। ऊपर के उदाहरणों में हम देखते हैं कि शब्दों के स्थान-परिवर्तन के अर्थ में कोई फ़र्क नहीं आया, किन्तु निश्चित स्थान या स्थान-प्रधान भाषाओं में वाक्य में शब्द का स्थान बदलने से अर्थ बदल जाता है। इसका सर्वोत्तम उदाहरण चीनी है। यों हिन्दी, अंग्रेज़ी आदि आधुनिक भारोपीय भाषाओं में भी यह प्रवृत्ति कुछ है। अंग्रेज़ी का एक उदाहरण है :

अंग्रेज़ी

Zaid killed Amar=ज़ैद ने अमर को मारा।
Amar killed Zaid=अमर ने ज़ैद को मारा। (यहाँ शब्द के स्थान-परिवर्तन से वाक्य का अर्थ उलट गया)

चीनी में तो यह प्रवृत्ति विशेष रूप से मिलती है—

पा ताङ् शेन=पा शेन को मारता है।
शेन ताङ् पा=शेन पा को मारता है।

अंग्रेज़ी में सामान्यतः कर्त्ता, क्रिया और तब कर्म आता है, पर प्रश्नवाचक वाक्य में क्रिया का कुछ अंश पहले ही आ जाता है। विशेषण संज्ञा के पहले आता है और क्रियाविशेषण क्रिया के बाद में। हिन्दी में कर्त्ता, कर्म और तब क्रिया रखते हैं। सामान्यतः विशेषण संज्ञा के पूर्व तथा क्रिया-विशेषण क्रिया के पूर्व रखते हैं। चीनी में अंग्रेज़ी की भाँति कर्ता के बाद क्रिया और तब कर्म रखते हैं। यद्यपि इसकी कुछ बोलियों में कर्म पहले भी आ जाता है। विशेषण और क्रिया-विशेषण हिन्दी की भाँति प्रायः संज्ञा और क्रिया के पूर्व आते हैं। प्रश्नवाचक शब्द (जैसे क्या) अंग्रेज़ी तथा हिन्दी में वाक्य के आरम्भ में आते हैं, पर चीनी में वाक्य के अन्त में।

फान त्स ल मा ?

---

१. यह बात कुछ सीमाओं के भीतर ही सत्य है। इस प्रकार शब्दों को मनमाने ढंग से जहाँ भी चाहे रखा तो जा सकता है, किन्तु ऐसा सर्वदा होता नहीं रहा है। इन संयोगात्मक भाषाओं में भी परम्परागत रूप से कुछ क्रम ही विशेष प्रचलित रहे हैं और इसी कारण उन्हीं का प्रयोग अधिक होता रहा है।

Scanned with CamScanner

खाना खा लिया क्या ?

किसी भी भाषा के शब्दों के स्थान की निश्चितता के ये नियम निरपवाद नहीं होते। यहाँ तक कि इस प्रकार की प्रधान भाषा चीनी में भी नहीं। ऊपर का चीनी वाक्य इस प्रकार भी कहा जा सकता है—

त्स फान ल मा ?

खा खाना लिया क्या ?=खाना खा लिया क्या ?

बल देने के लिए पदक्रम-प्रधान भाषाओं में भी पदक्रम में प्रायः परिवर्तन ला देते हैं। उदाहरणार्थ, हिन्दी में सामान्यतः कहेंगे 'मैं घर जा रहा हूँ' किन्तु बल देने के लिए 'घर जा रहा हूँ मैं' या 'जा रहा हूँ घर मैं' आदि भी कहते हैं।

(२) **अन्वय**—'अन्वय' का अर्थ है व्याकरणिक अनुरूपता। विभिन्न भाषाओं में विशेषण-विशेष्य, कर्ता-क्रिया, कर्म-क्रिया तथा कर्ता-क्रिया विशेषण आदि विभिन्न व्याकरणिक कोटियों में लिंग, वचन, पुरुष तथा मूल और विकृत रूप आदि की अनुरूपता होती है। यहाँ दो बातें ध्यान देने की हैं : (क) हर भाषा के अन्वय के नियम अलग-अलग होते हैं। (ख) अलग-अलग भाषाओं में अलग-अलग चीजों का अन्वय होता है। जैसे संस्कृत में कर्ता-क्रिया में लिंग का अन्वय नहीं है, किन्तु हिन्दी में है—

रामः गच्छति—राम जाता है।

सीता गच्छति—सीता जाती है।

ऐसे ही हिन्दी में विशेषण में भी वचन तथा लिंग का अन्वय हैं, किन्तु अंग्रेज़ी में नहीं है—

अच्छा लड़का—good boy

अच्छी लड़की—good girl

अच्छे लड़के—good boys

हिन्दी में क्रिया कभी तो कर्ता के अनुरूप होती है—

मोहन गया—शीला गई

कभी कर्म के

राम ने **रोटी** खाई—राम ने **आम** खाया

सीता ने **आम** खाया—सीता ने **दो आम** खाए

राम ने कई **पराठे** खाए—राम ने **एक पराठा** खाया

कभी-कभी नहीं—

लड़की ने लड़के को **मारा**।

लड़के ने लड़की को **मारा**।

लड़कियों ने लड़कों को **मारा**।

लड़कों ने लड़कियों को **मारा**।

ऐसे ही मूल विकृत रूप की भी विशेषण-विशेष्य में अनुरूपता होती है—

वह **काला कपड़ा** उठाओ—उस **काले कपड़े** को उठाओ।

(३) **लोप**—वाक्य रचना में सभी अपेक्षित शब्दों का प्रयोग सर्वदा नहीं किया जाता। कभी-कभी कुछ का लोप भी हो जाता है। किन्तु यह लोप कुछ ही का हो सकता है और वे निश्चित

Scanned with CamScanner

खाना खा लिया क्या ? निश्चितता के ये नियम निरपवाद नहीं होते। यहां

किसी भी भाषा के शब्दों के स्थान की प्रधान भाषा चीनी में भी नहीं। ऊपर का चीनी वाक्य इस प्रकार भी कहा जा

तक कि इस प्रकार की

सकता है—

त्स फान त्स मा ?

खा खाना लिया क्या ? = खाना खा लिया क्या ?

बल देने के लिए पदक्रम-प्रधान भाषाओं में भी पदक्रम में प्रायः परिवर्तन ला देते हैं। उदाहरणार्थ, हिन्दी में सामान्यतः कहेंगे 'मैं घर जा रहा हूँ' किन्तु बल देने के लिए 'घर जा रहा हूँ मैं' या 'जा रहा हूँ घर मैं' आदि भी कहते हैं।

(२) **अन्वय**—'अन्वय' का अर्थ है व्याकरणिक अनुरूपता। विभिन्न भाषाओं में विशेषण-विशेष्य, कर्ता-क्रिया, कर्म-क्रिया तथा कर्ता-क्रिया विशेषण आदि विभिन्न व्याकरणिक कोटियों में लिंग, वचन, पुरुष तथा मूल और विकृत रूप आदि की अनुरूपता होती है। यहाँ दो बातें ध्यान देने की हैं : (क) हर भाषा के अन्वय के नियम अलग-अलग होते हैं। (ख) अलग-अलग भाषाओं में अलग-अलग चीजों का अन्वय होता है। जैसे संस्कृत में कर्ता-क्रिया में लिंग का अन्वय नहीं है, किन्तु हिन्दी में है—

राम: गच्छति—राम जाता है।

सीता गच्छति—सीता जाती है।

ऐसे ही हिन्दी में विशेषण में भी वचन तथा लिंग का अन्वय हैं, किन्तु अंग्रेज़ी में नहीं है—

अच्छा लड़का—good boy

अच्छी लड़की—good girl

अच्छे लड़के—good boys

हिन्दी में क्रिया कभी तो कर्ता के अनुरूप होती है—

मोहन गया—शीला गई

कभी कर्म के

राम ने रोटी खाई—राम ने आम खाया

सीता ने आम खाया—सीता ने दो आम खाए

राम ने कई पराठे खाए—राम ने एक पराठा खाया

कभी-कभी नहीं—

लड़की ने लड़के को मारा।

लड़के ने लड़की को मारा।

लड़कियों ने लड़कों को मारा।

लड़कों ने लड़कियों को मारा।

ऐसे ही मूल विकृत रूप की भी विशेषण-विशेष्य में अनुरूपता होती है—

वह काला कपड़ा उठाओ—उस काले कपड़े को उठाओ।

भाषा विज्ञान
भोलानाथ तिवारी
किताब महल, प्रकाशन

Scanned with CamScanner